arunjaity1:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:05 PM Page 148

The Indian EXPRESS

THE OP-ED PAGE 11

Nanaji, as I knew him

He was at the vortex of a powerful anti-Congress wave

उन्होंने एक बार मुझसे कहा था कि जब वह छोटे थे तो उनके पास कई-कई दिन तक खाने के लिए कुछ नहीं होता था। लेकिन इससे वह नक्सलवादी नहीं हो गए।

नानाजी, जैसा मैंने उन्हें जाना

जिन राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्रों पर उनका लगभग छह दशकों तक दबदबा रहा, उनमें 'नानाजी ' के नाम से जाने जाने वाले नाना देशमुख नहीं रहे। राजनीति में और राजनीति के बाहर उनसे प्रेरित होने वाले कई लोगों ने उन्हें एक अत्यंत उत्कृष्ट आदर्शवादी के तौर पर देखा और माना, उनके मित्रों और प्रशंसकों ने उन्हें एक महान राजनैतिक रणनीतिकार के तौर पर आंका और महसूस किया। छोटी उम्र में ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ने और प्रचारक बनने वाले नानाजी निश्चित तौर पर एक महान संगठनकर्ता थे। हर क्षेत्र में उच्चपदस्थ लोगों में उनके अभिन्न मित्र मौजूद थे। बहुत कम उम्र से ही उन्हें अपनी सांगठनिक विरादरी से कहीं आगे तक स्वीकार्यता मिलने लगी थी। वह विनोबा भावे के उत्कृष्ट भूदान आंदोलन और दिल्ली की गंदी राजनीति, दोनों में समान रूप से सहज रहते थे। विपक्षियों की कतार में भी उनके मित्र होते थे। जब जवाहरलाल नेहरू ने 1948 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबंध लगा दिया था, तब नानाजी देशमुख ने भूमिगत आंदोलन संगठित करना शुरू कर दिया था। कहां से? मानो या न मानो, रफी अहमद किदवई के घर से, जो पंडित नेहरू की सरकार में मंत्री थे। यह बात सभी जानते थे कि नेहरू राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को अपना धुर शत्रु मानते थे और यह घोषणा तक कर चुके थे कि वह (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के ध्वज) भगवा को फहराने के लिए भारत में एक इंच भी जमीन नहीं देंगे। इसके बावजूद नेहरू के अभिन्न मित्र और उनकी केबिनेट के सदस्य किदवई को, नानाजी को अपने घर में रखने और इससे भी बढ़कर भूमिगत गतिविधियां चलाने देने में कोई हर्ज नहीं था। इससे युवा नानाजी के चुम्बकीय व्यक्तित्व का पता चलता है, जो उस समय तीस वर्ष से कम ही उम्र के रहे होंगे।

नानाजी देशमुख के साथ मेरा संबंध रामनाथ गोयनका के साथ मेरी मित्रता से शुरू हुआ। नानाजी और गोयनकाजी दोनों न केवल महान मित्र थे, बल्कि वे देश के बारे में एक जैसा ही सोचते और महसूस करते थे। उनके परस्पर विश्वास और प्रशंसा की जड़ें पूरी तरह अपनी मातृभूमि के प्रति उनके प्रेम में निहित थीं, जिसमें किसी भी तरह के निजी हित का नितांत अभाव था। नानाजी-रामनाथजी की जोड़ी का लक्ष्य उस चीज के अलावा कुछ नहीं था, जिसमें वे अपने देश का हित समझते थे। रामनाथ गोयनका ने इंडियन एक्सप्रेस को सिर्फ एक अखबार के तौर पर नहीं, बल्कि देश की सेवा में लगी सभी राष्ट्रवादी शक्तियों के उद्देश्य के एक सक्रिय भागीदार के तौर पर ढाला था, जिससे राजनैतिक और सामाजिक संवाद का एजेंडा तय हुआ था। भय क्या होता है, रामनाथजी कभी जानते ही नहीं थे, न ही नानाजी जानते थे। इसी जोड़ी ने ही 1974 में जयप्रकाश नारायण को बिहार आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए राजी कराया था, जिसने देश का राजनैतिक चित्र बदल कर रख दिया था। बिहार आंदोलन स्वतंत्र भारत के इतिहास के सबसे महान आंदोलनों में से एक था।

एक अविश्वसनीय घटना ने इंदिरा गांधी के खिलाफ जयप्रकाश नारायण को आंदोलन का नेतृत्व करने संबंधी नानाजी और रामनाथजी के आग्रह को स्वीकार करने के लिए तैयार कर दिया।

एस. गुरुमूर्ति

मुझे इसके बारे में जानकारी 1980 के दशक के अंत में तब हुई जब बंबई में एक्सप्रेस टॉवर्स में एक रात्रिभोज के दौरान मैंने नानाजी और रामनाथजी से पूछा कि वे जेपी को इस आंदोलन में कैसे लेकर आए थे। नानाजी ने इस सिहरा देने वाली और अविश्वसनीय घटना का विवरण दिया। रामनाथजी, नानाजी, 1942 के भूमिगत आंदोलन के नायक अच्युत पटवर्धन और हिन्दी के महान कवि रामधारी सिंह दिनकर की एक ऐतिहासिक बैठक 1973 में बंगलौर में इंडियन एक्सप्रेस के गेस्ट हाउस में हुई थी। चारों इस बात पर जोर देने लगे कि जेपी को आंदोलन का नेतृत्व करना चाहिए, क्योंकि इंदिरा गांधी बेहद तानाशाह हो गई हैं और वह न्यायपालिका और नौकरशाही सहित लोकतंत्र के संस्थागत ढांचे को नष्ट करना शुरू कर चुकी हैं। संयोगवश, दिनकरजी नेहरू परिवार के और विशेषकर खुद इंदिरा गांधी के सबसे महान मित्रों में से एक थे। लेकिन इसने उन्हें उस बात से विचलित नहीं होने दिया, जिसे वह राष्ट्र के प्रति अपना कर्तव्य समझते थे। जेपी मूलतः अपने स्वास्थ्य के कारण अनमने थे। वह मधुमेह के रोगी थे और उन्हें पौरुष ग्रंथि की बहुत ज्यादा समस्या थी। उन्होंने कहा कि वह लंबे समय तक जी नहीं पाएंगे और उनका स्वास्थ्य इतना कठिन काम करने की अनुमति नहीं देता है। रामनाथजी ने उन्हें विश्वास दिलाया कि वह वेल्लौर में उनका पौरुष ग्रंथि की शल्य चिकित्सा करवा देंगे, जो कि बाद में करवा दी गई थी। लेकिन जेपी फिर भी अपना मन नहीं बना पा रहे थे। इस पर रामनाथजी ने सुझाव दिया कि वह सभी तिरुपति चलें, दर्शन और पूजा करके वहां से मद्रास चलें और फिर यह बातचीत जारी रखी जाए। इसके बाद वे सभी तिरुपति चले गए।

तिरुपति में दर्शन के दौरान रामधारी सिंह दिनकर ने खुले आम भगवान बालाजी से प्रार्थना की, जिसे जेपी और अन्य लोगों ने भी सुना कि उनके जीवन के जितने भी वर्ष बचे हैं, ईश्वर वह जेपी को दे दें ताकि वह मातृभूमि की सेवा कर सकने में समर्थ हो सकें। इसके बाद वे सभी मद्रास में माउंट रोड में एक्सप्रेस इस्टेट में रामनाथजी के घर पहुंचे जहां इंडियन एक्सप्रेस का दफ्तर भी था। कुछ ही घंटे बाद रामधारी सिंह दिनकर रामनाथ गोयनका की गोद में गिर पड़े और उन्होंने प्राण त्याग दिए। जी हां, उनकी मौत हो गई और जेपी, नानाजी और अच्युत पटवर्धन वहीं थे। आंदोलन का नेतृत्व करने का फैसला जेपी ने तुरंत कर लिया। मेरे कई बार के आग्रह के बावजूद नानाजी ने इस बारे में इंडियन एक्सप्रेस में लिखने से इनकार कर दिया। जब मैंने उनसे पूछा कि इस बारे में देश के लोगों को जानकारी कैसे होगी, तो उन्होंने कहा कि उन्होंने इस बारे में अपनी डायरियों में लिखा है और वह चाहेंगे कि उनकी मृत्यु के बाद यह जानकारी उजागर हो। अब जबकि वह इस दुनिया में नहीं हैं, मैं इस बारे में लिखने में स्वतंत्रता महसूस करता हूं।

इसके बाद जेपी ने स्वतंत्र भारत में भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक सबसे बड़े जनांदोलन का नेतृत्व किया और इसके परिणामस्वरूप भारत में कुख्यात आपातकाल लागू किया गया, विपक्ष के सारे राष्ट्रीय नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। नानाजी उस भूमिगत आंदोलन की शुरुआत करने वालों में से एक थे, जो अंततः 1977 में उस समय जनता लहर बनकर प्रस्फुटित हुआ, जब इंदिरा गांधी ने अपनी तानाशाही पर जनता की मुहर लगवाने के लिए संसद के चुनावों की घोषणा कर दी थी। जनता पार्टी के शिल्पी नानाजी पहली बार चुनाव लड़े और विजयी रहे। परंतु जब मोरारजी ने बहुत आग्रह किया कि उन्हें मंत्री होना चाहिए, तो उन्होंने मंत्री बनने से इनकार कर दिया।

बाद में 1980 में जब जनता पार्टी का विभाजन और भाजपा का गठन हुआ, तो नानाजी ने घोषणा की कि चूंकि वह 65 वर्ष के हो रहे हैं, इसलिए वह राजनीति से रिटायर होना चाहेंगे। सामाजिक कार्यकर्ता की एक नई भूमिका उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। उन्होंने अपना कार्य सबसे पहले उत्तरप्रदेश के सबसे पिछड़े गोंडा जिले से शुरू किया, फिर महाराष्ट्र के उतने ही सूखाग्रस्त और गरीबी की मार झेलने वाले बीड जिले में किया और अंततः चित्रकूट जिले के करीब 500 गांवों में नैतिक मूल्यों के साथ सामाजिक-आर्थिक विकास का एक अपेक्षाकृत ज्यादा व्यापक कार्य करने में जुट गए। तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम ने नानाजी के चित्रकूट प्रकल्प का दौरा किया था और यह देखते हुए कि जिले के लगभग 80 गांव मुकदमेबाजी से पूरी तरह मुक्त हो गए हैं, इसे भारत के लिए सबसे उपयुक्त प्रकल्प करार दिया था।

उन्होंने एक बार मुझसे कहा था कि जब वह छोटे थे तो उनके पास कई कई दिन तक खाने के लिए कुछ नहीं होता था। लेकिन इससे वह नक्सलवादी नहीं हो गए। सही उम्र पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से परिचय और सही लोगों के संसर्ग ने उन्हें एक महान राष्ट्रवादी बना दिया, जो केवल अपनी मातृभूमि के गौरव के लिए जिए। ■

लेखक परिचय

लेखक जाने माने चिंतक, विचारक, अर्थशास्त्री, रणनीतिकार व स्तंभकार हैं। संप्रति, स्वदेशी जागरण मंच के सह-संयोजक हैं।